आयोजन समिति

संरक्षक – प्रो. केशरी लाल वर्मा,
कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर

सदस्य – प्रो. बशीर हसन, संकाय अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान, मनोविज्ञान अध्ययनशाला

प्रो. माया वर्मा, संकाय अध्यक्ष, कला संकाय, ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला

प्रो. भगवंत सिंह, अध्यक्ष, तुलनात्मक धर्मदर्शन एवं योग अध्ययनशाला

प्रो. आभा आर. पॉल, अध्यक्ष, इतिहास अध्ययनशाला

प्रो. मीताश्री मित्रा, अध्यक्ष, क्षेत्रीय अध्ययनशाला

प्रो. रीता वेणुगोपाल, अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा अध्ययनशाला

प्रो. ए.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, प्रबंधन अध्ययनशाला

प्रो. एन.के. बाधमार, अध्यक्ष, भूगोल अध्ययनशाला

प्रो. रविन्द्र ब्रम्हें, अध्यक्ष, अर्थशास्त्र अध्ययनशाला

प्रो. मीता झा, अध्यक्ष, मनोविज्ञान अध्ययनशाला

प्रो. राजीव चौधरी, अध्यक्ष, विधि अध्ययनशाला

संयोजक –डॉ. एल. एस. गजपाल, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला मो.नं.– 9826197413ए म्.उंपस दृ हंरचंस14 / हउंपसण्बवउ

आयोजन सचिव – डॉ. एन. कुजुर, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशालामो.नं.– 8982463227डॉ.(श्रीमती) हेमलता बोरकर वासनिक, वरिश्ठ सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला

मो.नं. – 9424213752

सदस्य –श्री सतीश साहू, अतिथि शिक्षक, समाजकार्य
डॉ. विनीता सिंह, अतिथि शिक्षक, समाजशास्त्र
डॉ. रीना ताम्रकार, अतिथि शिक्षक, समाजशास्त्र
मनीशा यदू, अतिथि शिक्षक, समाजकार्य

NAAC with Grade A

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर छत्तीसगढ़

राष्ट्रीय संगोष्ठी
21 वीं सदी में गांधी जी के सामाजिक विचारों की प्रासंगिकता

6 –8 दिसंबर 2019

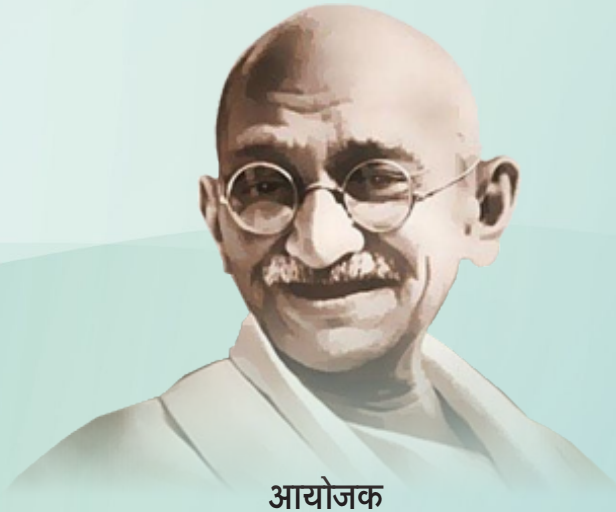

आयोजक

समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
492010

About the University

नेक 'A' ग्रेड प्राप्त पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़ राज्य का सबसे बड़ा और पुराना विश्वविद्यालय रहा है। जिसकी स्थापना 1 मई 1964 को हुई थी। विश्वविद्यालय का नामकरण, अविभाजित मध्यदेश के प्रथम मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल के नाम पर रखा गया है। विश्वविद्यालय परिसर 277 एकड़ में फैला हुआ है। विश्विद्यालय में 29 अध्ययनशालाएं है। विश्वविद्यालय में मानव संसाधन विकास केन्द्र (HRDC), NCNR, CBC जैसे केन्द्र इसे राश्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाता है।

About SoS in Sociology & Social Work

समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला पूर्व में समाजशास्त्र अध्ययनशाला के नाम से जाना जाता था। यह देश के ख्यातिप्राप्त अध्ययनशालाओं में से एक रहा है। अध्ययनशाला में वर्श 1965 से समाजशास्त्र का अध्यापन कार्य प्रारंभ हुआ। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा 1983 से 1993 तक वै। का विशेश दर्जा प्रदान किया गया था। अध्ययनशाला के संस्थापक प्रोफेसर देश के ख्यातिलब्ध मानवशास्त्री प्रो. टी.बी. नायक थे जबकि प्रथम अध्यक्ष प्रो. इन्द्रदेव, प्रोफेसर इमेरिटस तथा महात्मागांधी राष्ट्रीय फैलो (ICSSR) थे। प्रो. इन्द्रदेव अन्तर्राश्ट्रीय ख्यातिप्राप्त समाजशास्त्री होने के साथ–साथ भारतीय समाजशास्त्री परिशद के सचिव भी रहे हैं। अध्ययनशाला में एम. ए. समाजशास्त्र, एम–फिल समाजशास्त्र, पी–एच.डी. समाजशास्त्र के साथ–साथ मास्टर ऑफ सोशल वर्क पाठ्यक्रम संचालित हो रहा है। अध्ययनशाला के 70 से भी अधिक शोधार्थियों को पी–एच.डी. की उपाधि तथा 490 विधार्थियों को एम.फिल की उपाधि प्राप्त हो चुकी है। विगत पांच वर्शों में अध्ययनशाला के द्वारा 11 संयुक्त शोध परियोजना, 02 वृद्ध शोध परियोजना तथा 7 लघु शोध परियोजना पूर्ण किया जा चुका है जिसे ICSSR, UGC, CGCOST, RGSM, ECI, WCD के द्वारा वित्तीय सहयोग प्रदान किया गया था। विगत पांच वर्शों में अध्ययनशाला के 02 छात्रों में, 02 श्रत्थ्छम्ज्ए 14 छोत्रों में न्ळब् छम्ज् छात्रों नें ब्ळम्ज् पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण किया है।

About Seminar

गांधी विचार नहीं दर्शन है, यह इसलिए कि गांधी जी के दौर से लेकर अब तक अनेक विद्ववानों ने बुद्विजीवियों ने, शोधार्थियों ने केवल गांधी जी के विचारों को समझने में अपना पूरा जीवन लगा दिया फिर भी वे गांधी जी के विचारों को समझ पाने में पुर्णतः सफल नहीं रहे। आजादी के बाद देश के समक्ष अनेक सामाजिक आर्थिक चुनौतियां थी और उन चुनौतियों का उत्तर गांधी जी के विचारों में था, पर हम उनके विचारों को पूरी तरह वास्तविकता के धरातल पर लाने में सफल नहीं रहे।

गांधी जी के विचारों में था, पर हम उनके विचारों को पूरी तरह वास्तविकता के धरातल पर लाने में सफल नहीं रहे।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया हमें गांधी जी के विचारों से और दूर ले गयी पर इसी दौर में वैश्विक अशांति और हिंसा के भय के बीच संयुक्त राष्ट्रसंघ ने गांधी जी के जन्म दिवस को विश्व अहिंसा दिवस घोशित कर पूरी दूनिया को यह संदेश दिया कि गांधी जी आज भी कितने प्रासंगिक है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के 150 वीं जयंती वर्श के अवसर पर आयोजित यह राष्ट्रीय शोध संगोश्ठी न केवल बुद्धिजीवियों, शोधार्थियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को गांधी जी के विचारों को जानने का अवसर प्रदान करता है वरन युवा शोधार्थियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है जिन पर गांधी जी के विचारों को आगे ले जाने जाने का दायित्व है।

संगोष्ठी के उप–विषय :–

1. सामाजिक–आर्थिक विकास और महात्मा गांधी
2. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गांधी
3. भारतीय संस्कृति एवं गांधी दर्शन
4. दलितोद्धार और गांधी दर्शन
5. महात्मा गांधी और सर्वोदय
6. महात्मा गांधी और स्वालंबन
7. महात्मा गांधी और नैतिक शिक्षा
8. गांधी का ग्राम स्वराज
9. महात्मा गांधी की शिक्षा, अध्यात्म और दर्शन
10. बापू और महिला सशक्तिकरण
11. छत्तीसगढ़ में गांधी
12. साहित्य, समाज और महात्मा गांधी

टी.ए. / डी.ए. एवं आवास व्यवस्था के संबंध में

प्रतिभागी अपने यात्रा व्यय की व्यवस्था स्वयं वहन करेंगे। आवास व्यवस्था सशुल्क होगी, इस हेतु पूर्व सूचना आवश्यक होगी। संगोश्ठी में केवल नाश्ता और भोजन व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

शोध सारांश एवं आलेख भेजने की महत्वपूर्ण तिथियां :–

प्रतिभागी अपना शोध सारांश (अधिकतम 300 शब्दों में) निर्धारित पंजीयन शुल्क के साथ दिनांक 15 नवंबर 2019 तथा शोध आलेख दिनांक 25 नवंबर 2019 तक मउंपस पर भेज सकेंगे।
मउंपस. हंरचंस14 /हउंपसण्बवउ
शोध सारांश एवं शोध आलेख निम्नानुसार फोन्ट एवं साईज में भेजने पर ही स्वीकार होगा –
हिन्दी में– कृतिदेव 11, फोन्ट साईज– 14
अंग्रेजी में–Times New Roman, Font Size- 12

पंजीयन शुल्क –

प्राध्यापकगण	–	1000/-
शोधार्थी	–	500/-
विद्यार्थी	–	200/-

आमंत्रित वक्तागण –

- प्रो. नृपेन्द्र मोदी, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
- डॉ. अनिल दत्त मिश्रा, नई दिल्ली
- प्रो. आई.एस. चौहान, पूर्व कुलपति, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- प्रो. जयप्रकाश एम. त्रिवेदी, आनंद (गुजरात)
- प्रो. अरविंद जोशी, बी.एच.यू, वाराणसी (उत्तरप्रदेश)
- प्रो. सी.एस.एस. ठाकुर, आर.डी. यूनिवर्सिटी, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
- प्रो. बी.के. स्वॉइन, आर.टी.एम. यूनिवर्सिटी, नागपुर (महाराष्ट्र)